नारी समस्या को उजागर करता उपन्यास शकुन्तीका : एक विवेचन

डॉ . अमलपुरे सूर्यकांत विश्वनाथ
अध्यक्ष हिंदी विभाग
डॉ . श्री . नानासाहेब धर्माधिकारी महाविद्यालय गोवे– कोलाड ,
तहसील – रोहा , जिला – रायगड , महाराष्ट्र , पिन– 402304
मो नं 9766731470/9421451703
ईमेल – sureshamalpure @ gmail. com

सारांश : –

हिंदी साहित्य में 21 वी सदी के प्रसिद्ध उपन्यासकारों में भगवानदास मोरवाल जी का नाम प्रमुख है । लगभग उनके 11 उपन्यास प्रसिद्ध हो गए है । इनका सर्व प्रसिद्ध उपन्यास नारी समस्या को उजागर करने वाला शकुंतिका माना गया है । जिसका अर्थ है 'गौरैया' जो नारी का प्रतीकात्मक नाम भी है । इस उपन्यास का प्रकाशन 2020 में राजकमल प्रकाशन दिल्ली से हुआ है । भारतीय समाज में नारी का जीवन और उनकी समस्याओं को उजागर करने की कोशिश लेखक ने की है । यह समस्या वर्तमान में प्रमुख है । सरकार घोषणा कराती है 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' किन्तु यह सफल उक्ति कितनी हो रहीं है हम सब जानते हैं । अगर समाज का विकास करना हो तो ऐसे उपन्यास और लेखकों की आवश्यकता है जो समाज का यथार्थ चित्रण अपने उपन्यासों में करते हैं । समाज की मानसिकता बदलने की कोशिश मोरवाल जी ने प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से की है । ग्रामीण जीवन के आधुनिक चितेरे, जनपदीय गंध और उसकी लोकसंस्कृति में रचे–बसे भगवानदास मोरवाल ने अपनी अदम्य व् जिजीविषापूर्ण कथा यात्रा में एक अलग पहचान बनाई है । आधुनिक काल में पैदा हुई अनेक विसंगतियों को चित्रित करता है यह उपन्यास 'शकुन्तीका' । यह उपन्यास परम्परा एवं आधुनिकता के द्वंद्व और नारी के बदलते परिदृश्य को उद्घाटित करते हुए पात्रों की जीवंत स्थिति को उकेरता है ।

कुंजी शब्द : अकेलापन, पुरुषवादी, शकुन्तीका, आधुनिक विमर्श, स्त्री सशक्तिकरण, लोकजीवन, मानसिक परिवर्तन आदि ।
अनुसंधान पद्धति :– सर्वेक्षणात्मक एवं विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्धति ।

अनुसंधान के उद्देश्य :–

1] भगवानदास मोरवाल के हिंदी साहित्य में योगदान को देखना ।
2] ग्रामीण जीवन का यथार्थ और नारी समस्या को देखना ।
3] शकुन्तीका उपन्यास में नारी स्थिति को देखना ।
4] शकुन्तीका उपन्यास में नारी को प्रेरणा देने वाली पात्र पीहू को देखना ।

प्रस्तावना :–

हम कहते है कि 'यत्र नार्यस्तु पूजन्ते, रमन्ते तत्र देवता'। लेकिन वास्तविक जीवन में इसका अनुपालन नहीं होता है । इसलिए समाज में ग्रामीण से शहरी भागों में नारी की दुर्दशा दिखाई देती है । उपन्यास शकुन्तीका भारतीय समाज के इसी रूढ़िवादी सोच के साथ–साथ समयानुकूल धीरे –धीरे नारी के प्रति समाज की बदलती मानसिकता का आख्यान है । कहते है कि

बेटियाँ घर की रौनक होती है । सुख–दुख में हमारे काम आती हैं । गौरैया की तरह हमारे आंगन में फुदकती और चहकती है परंतु आज के युग में गौरैया विलुप्त होती जा रही है, यही सन्देश इस उपन्यास में दिया है ।

ऐसे महान उपन्यासकार का जन्म 23 जनवरी 1960 में हरियाणा के काला पानी कहे जाने वाले मेवात के जिला नूह के नगीना गाँव में हुआ । इनकी प्राथमिक शिक्षा गाँव में ही हुई तथा उच्च शिक्षा एम्. ए. हिंदी और पत्रकारिता उतीर्ण कर इन्होंने स्वतंत्र लेखन कार्य प्रारंभ किया । उनका लेखन हमेशा अछूते विषयों पर ही दिखाई देता है । इनकी रचनाएँ परम्परा, विकास , लोकतंत्र तथा जनता को वाणी प्रदान करने वाली हैं । इनके उपन्यास की अंतर्वस्तु के साहित्यिक एवं समाजशास्त्रीय महत्त्व को बहुत बार प्रशंशित किया गया है । इनकी प्रमुख रचनाएँ अग्रलिखित है–

काला पहाड़–1999, बबल तेरा देस में–2004, रेट–2008, नरक मसीहा–2014, हलाला–2015 , सुर बंजारन –2017, वंचना–2019, शकुन्तीका–2020, खानजादा –2021, मोक्षवान –2023, काँस –2024 आदि ।

कहानी संग्रह :– सिला हुआ आदमी, सूर्यास्त से पहले, अस्सी मॉडल उर्फ़ सुभेदार, सीढियाँ, माँ और उसका देवता, लक्ष्मण रेखा, धूप से जले सूरजमुखी, मेहराब और अन्य कहानियाँ ।

कविता संग्रह :– दोपहरी चुप है ।

सम्मान :– दर्जनों पुरस्कार मिले हैं । उनकी रचनाएँ भारत के कई विश्वविद्यालओं के स्नातक तथा परा स्नातक पाठ्यक्रम में शामिल की गई है । यही उनकी सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि मानी जाती है ।

शकुन्तीका उपन्यास में नारी समस्या

प्रस्तुत उपन्यास शकुन्तीका में पारिवारिक मूल्यों के पुनः स्थापन करने की कोशिश लेखक ने की है । आधुनिक काल में भी भारतीय समाज में पैदा हुई विसंगतियों, सामाजिक आग्रह–दुराग्रा, परंपरा एवं आधुनिकता के द्वंद्व और नारी के बदलते परिदृश्य को उद्घाटित करते हुए पात्रों की जीवंत स्थितियों को उकेरने वाला यह उपन्यास है । इसके बारे में डॉ. अनिल सिंह लिखते हैं– "शकुन्तीका मोरवाल जी का ऐसा उपन्यास है, जिसमे कई पक्षों से उन्होंने समाज की नब्ज को टटोलने का काम किया है । यह कृति जहाँ एक तरफ भारतीय पारिवारिक मूल्यों के पुनः स्थापन का प्रयास है, वही दूसरी तरफ भारतीय मानसिकता में आज तक स्त्रियों को दोयम दर्जे का समझे जाने के विरुद्ध एक घोष भी है ।"[1]

प्रस्तुत उपन्यास में दो परिवार, दो पीढ़ियों की कहानी है । दशरथ और भगवती के दो पुत्र हैं, दोनों की शादी हो चुकी है पर दोनों पुत्रों को कोई पुत्र नहीं है । दूसरी ओर उग्रसेन तथा दुर्गा का परिवार है जो इनके पडोसी हैं । उनके दो पुत्र नागदत्त और अभय हैं । दोनों के दो–दो पुत्र हैं । दशरथ अपने बेटे रुपेश को लड़का गोद लेने की बजाय लड़की गोद लेने की बात करते हैं । जो बड़ी होकर ऑस्ट्रेलिया की बहुत बड़ी कंपनी में सीईओ बनती है जिसका नाम पीहू है । आगे दादा–दादी की चहेती पीहू डी.बी. फाउंडेशन अर्थात दशरथ और भगवती के नाम में संस्था बनाकर अनाथालय को दान देती है । वहां के कमरे देखती है और स्टाफ से मिलती है । चारों बहनों का आपसी प्रेम देखकर समाज वाह वाह करता है । शकुन्तीका यह नाम ऐतिहासिक पात्र शकुंतला से मिलता है । शकुंतला मेनका नामक अप्सरा और ऋषी विश्वामित्र की संतान थी, जिसके जन्म लेते ही माता–पिता ने त्याग दिया था । शकुंतो द्वारा नवजात पुत्री की रक्षा की गई एवं ऋषि कण्व ने उन्हें अपने आंगन में पाला–पोसा था । तब से उस कन्या का नाम शकुंतला पड़ा, आगे शकुन्तीका यह नाम दिया गया । उपन्यास की पात्र पीहू भी इसी तरह त्यागी गई नवजात बच्ची थी, जिसे अनाथालय से लेकर रुपेश ने पाला था । पीहू ने शकुंतला की तरह यश पाया । इस तरह शकुंतिका उपन्यास की पीहू का जीवन शकुंतला के जीवन से मिलता–जुलता दिखाई पड़ता है ।

प्रस्तुत उपन्यास की भूमिका के रूप में उपन्यासकार ने लिखा है– "उपन्यास शकुन्तीका भारतीय समाज के इसी रूढ़िवादी सोच के साथ–साथ समयानुकूल धीरे–धीरे बेटियों के प्रति बदलती मानसिकता का आख्यान है । कहते है की बेटियाँ घर की रौनक होती है । अगर माता–पिता के दिल के सबसे करीब कोई होता है, तो वे बेटियाँ ही होती है । बेटियाँ ही सबसे अधिक उनके सुख–दुःख में काम आती है । हमारे घर–परिवारों की ये शकुन्तीकाएँ अर्थात गौरैया जब–जब आंगन में फुदकती हुई चहकती है, तब यह दृश्य कितना मनोहारी होता है, इसकी वही कल्पना कर सकता है, जब विवाह के बाद में विदा होकर चली जाती है ।"[2]

क] लैंगिक भेदभाव की समस्या :–

प्रस्तुत उपन्यास शकुन्तीका में सबसे बड़ी नारी की समस्या है लैंगिकता, लैंगिक भेदभाव यह भारतीय समाज का पुराणा अभिशाप है । उत्तर भारतीय क्षेत्र में माध्यम वर्गीय परिवारों में यह प्रमुख समस्या दिखाई देती है । पुरानी चली आई प्रथाएँ आदमी के मस्तिष्क में संस्कार रूप में स्थित होती है, और वह प्रमुख समस्या बन जाती है । बेटा ही चाहिए, बेटी नहीं चाहिए यह बहुत बडी समस्या है आज के वर्तमान समाज की । प्रस्तुत उपन्यास में जो परिवार है वह बेटियों का ही परिवार है । दूसरा परिवार बेटे का है इस परिवार में पोता न होने की टीस भगवती के कलेजे में रह–रहकर उठती रहती है । उग्रसेन के घर में बेटे के जन्म पर बड़ा जश्न होता है । वह अपना दुःख अपने पडोसी दशरथ से व्यक्त करते हुए कहता है– "दशरथ क्या बताऊँ, हर काम के लिए दस बार कहना पडता है । मैं तो जब देखों तुम्हारे घर से तुम्हारे पोतियों को बस यही कहते हुए सुनाता हूँ, आई दादाजी, आई अम्मा, ऐसा लगता है जैसे तुम्हारे घर में लड़कियाँ नहीं, चिड़ियों का छोटा सा झुंड वास करता है । देखो उधर से इधर फुदकती रहती हैं ।"[3]

ख] स्त्री अस्मिता की पहचान :–

प्रस्तुत उपन्यास शकुन्तीका में आधुनिक काल की लड़कियाँ अपने ज्ञान के माध्यम से अपना अस्तित्व निर्माण करने में कामयाब हो रही है । पात्र सिया वकील बनना, गार्गी का डॉक्टर बनना और पीहू परदेश जाकर नौकरी करना नारी की अपनी गुणवत्ता है । जब स्त्री आर्थिक या शैक्षणिक रूप से सबल हो जाती है तब वह अपने जीवन के निर्णय लेने में सफल हो जाती है । इस उपन्यास में भगवती की पोतियों को शिक्षा विभूषित करना वे अपना जीवन साथी चुनने का फैसला लेने में समर्थ दिखाई देती है । अनमेल विवाह की समस्या एवं उपाय को दर्शाने की की कोशिश भी इसमें की है । धर्म–जाति आदि भेद को मिटाकर दोनों लड़कियों की शादी बिरादरी के बहार करना आधुनिकतावादी विचार है । आज स्त्री ही स्त्री की असली दुश्मन बन गई है । इसमें परिवर्तन लाना समाज के लिए बहुत जरुरी है । स्त्री का सम्मान तभी बढ़ेगा जब परिवार के पुरुष उनका हौसला बढाकर उन्हें प्रेरणा देंगे । उपन्यास में स्त्री पात्र भगवती सोचती है, बहु तीसरी बार गर्भवती है, पहली दो लड़कियाँ हैं अतः वह तीसरी बार लड़की नहीं चाहती है । तब पड़ोसन दुर्गा उसे मेडिकल जाँच करके लड़की हो तो गर्भ हटाने की सलाह देती है, जो उसे सही लगती है मगर अब यह उस बेटी का मन ही मन में तिरस्कार करती है । इसी स्त्री मानसिकता को हमें बदलना होगा । कन्याओं के प्रति सकारात्मक सोच और आत्मिक सहजता को जगाना ही इस उपन्यास का प्रमुख उद्देश्य सफल होता दिखाई देता है ।

ग] नारी जागृति करने का सफल प्रयास :–

प्रस्तुत उपन्यास शकुन्तीका में नारी जागृति करने के लिए सफल प्रयास किये है । नारी की महत्ता, उसकी अस्मिता, कर्त्तव्य, स्त्री–पुरुष भेदभाव तथा जाति–धर्म के बाहर जाकर आधुनिक विचार करना, बौद्धिक विकास तथा नारी को आत्मनिर्भर बनाने की कोशिश इस उपन्यास में की है । नारी के स्नेह, वात्सल्य, कोमलता, दया आदि मानवीय गुणों पर सृष्टि थमी हुई है । दशरथ की पोतियाँ अपने दादा–दादी की सेवा में लगी रहती हैं ।

आधुनिक युग में नारी अपने अधिकारों के प्रति सजग बनी है । उसे पुरुष के बराबर का स्थान क़ानूनी तौर पर प्राप्त है । लेकिन भारतीय समाज में परम्परा से चली आ रही स्त्री–पुरुष असमानता आज भी समाप्त नहीं हुई है । लैंगिक विभेदीकरण के इस मुद्दों को लेकर उपन्यासकार ने बड़ा यथार्थपरक प्रस्तुत किया है ।

शकुन्तीका उपन्यास की भाषा शैली :–

प्रस्तुत उपन्यास में भगवानदास मोरवाल ने परम्परागत समाज और आधुनिक समाज में बोली जाने वाली सहज एवं सरल भाषा का प्रयोग किया है । मार्मिक और पात्रानुकूल भाषा दिखाई देती है । भाषा में अलग–अलग बिम्ब और मुहावरे परिस्थितिनुरूप प्रयोग में लाये गये हैं । जैसे– खबर कपास में लगी आग की तरह फ़ैल गई, मोबाईल कूकना, सारा घर अबोली में बदलने लगा आदि । उपन्यास में कहीं–कहीं तो काव्यात्मक भाषा शैली भी दिखाई देती है । जैसे– स्मृतियों का भी अपना शास्त्र होता है, जब–जब हमें लगता है कि वह धुंधली पड़ने लगी है तभी वह किसी न किसी बहाने किसी ऋचा या आयात की तरह चुपके से आकार हमारी स्मृतियों पर छाई धुंध को हटा फिर से ताजा हो जाती है ।

निष्कर्ष :–

उपर्युक्त विवेचन के अनुरूप हम निष्कर्ष रूप से कह सकते हैं कि, शकुन्तीका उपन्यास सामाजिक यथार्थ का प्रतिबिम्ब विस्तारपूर्वक पाठक के समक्ष रखता है । आधुनिकता के आवरण के भीतर भी समाज जिस मध्यकालीन बोध से ग्रस्त है, उस आवरण को उधेड़ कर रखने का कार्य इस उपन्यास में किया है । विभिन्न नारी विमर्शों तथा समस्या से लदालद भरा यह उपन्यास है । यहाँ सामाजिक भेदात्मक रीतियों को लेखक चुनौती देता हुआ दिखाई देता है । कथावस्तु में वर्तमान भारतीय समाज में बढ़ रही पाश्विविक प्रवृत्ति को उजागर करके मनोवैज्ञानिक रूप से सामाजिक सच्चाई को उजागर किया गया है, जहाँ पर विभेद के लिए कोई स्थान नहीं दिखाई देता ।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1. (संपादक) डॉ. अनिल सिंह, शकुन्तीका : सृजन और सृष्टि – लोकभारती प्रकाशन, 2021 पृ .16
2. (संपादक) डॉ. अनिल सिंह, शकुन्तीका : सृजन और सृष्टि – लोकभारती प्रकाशन ,2021 भूमिका से पृ –12
3. भगवनदस मोरवाल – शकुन्तीका पृ . 18